कलीसिया अध्याय 39

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[मनन का समय]* **1 पतरस 3-5**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (1 पतरस 3-5) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही माँ-बाप]* **(3) व्यवस्थाविवरण 6:6-7**

दो-दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(3) परमेश्वर के वचन को सिखाएं। व्यवस्थाविवरण 6:6-7। और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, इनकी चर्चा किया करना।

4	**शिक्षा**(85 मिनट) *[कलीसिया की सेवकाई को बहाल करना]* **अनुशासन का अभ्यास करना**

परिचय दें। यह शिक्षा सिद्धांत और अनुशासन का अभ्यास करने के बारे में है, अनुशासन वह माप उपाय है जब कोई सदस्य पाप करता है। यह माप उसके गलत कार्य तक ही सीमित रहना चाहिए ना कि गुनाहगार के उद्देश्य यह नही है कि गलती करने वाले को दण्डित किया जाए परन्तु उस गलती करनेवाले को यीशु मसीह एवं उसके सकरे मार्ग मे वापस लाना है। हम अनुशासन के अभ्यास की प्रक्रिया एवं दिशा निर्देश अनुशासन के अभ्यास के लिए।

क. अनुशासन का अभ्यास करने के कारण

1. अनुशासन की आज्ञा।

परिचय दें। मसीही *बचाए हुए पापी* है। वे धर्मी *ठहराए* गये हैं और आखरी न्याय के दिन समय ये उनके विरोध में गिने नही जाएगें, क्योंकि वह यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। (यूहन्ना 5:24) हालांकि पवित्र आत्मा मसीहीयों के अन्दर निरन्तर पवित्रीकरण कार्य कर रहा है। तथा उनके आसपास अन्य मसीहीयों के

कार्य वे अब भी पाप में पड़ते है। (1 यूहन्ना 1:8;10;2:1) ज्यादातर समय, मसीही लोग अपने पापों का अंगीकार करते है और पुन: उन्हे पापों की क्षमा एवं शुद्विकरण को प्राप्त करते हैं(1 यूहन्ना 1:9)। लेकिन जब वे अपने पापों से पश्चताप नही करते तो अनुशासन अनिवार्य हो जाता है।

पढ़ें। मत्ती 18:15, 1कुरिन्थियों 5:9-13।
खोजें और चर्चा करें। किन मामलों में मसीहीयों को अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए?
ध्यान दें। कुछ समय ऐसे होते हैं जब एक मसीही व्यक्ति अपने पापों से पश्चताप नही करता या करना नहीं चाहता हो सकता है कि चोर पहचानने वाला अपने आपको निर्दोष साबित करना चाहता है और दूसरे के आचरण को दोषी ठहरा रहा है।

मत्ती 18:15 में यीशु मसीहीयों को आज्ञा देते हैं "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करें तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा, यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।" इसलिए मसीहीयों को अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए जब उन्हें पता चले कि दूसरें मसीही व्यक्ति ने पाप किया हैं। 1 कुरिन्थियों 5:12-13 में प्रेरित पौलुस सिखाते हैं। "क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय परमेश्वर करता है 'इसलिए उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो'।"

इसलिए, मसीहियों को क्रियाविन्त होना चाहिए जब वो किसी भाई या बहन को किसी गम्भीर पापों का अभ्यास करते हुए देखें या उनके बारें में पता चले, उदाहरण: अनैकित यौन सम्बन्ध पैसे का लालच, शक्ति या प्रसिद्धि, मूर्तिपूजा, झूठ बोलना, दूसरों के बारें में चुगली करना(कानाफूसी), मतवालापन और (भ्रष्टाचार) व्यवसाय में, धोखा देना, गलत शिक्षा, विकार, अनआज्ञाकारिता(किसी की न सुनना)आदि।

2. अनुशासन का अभ्यास करने का मूल्य।

पढ़ें। नीतिवचन 3:11-12; 6-23; 10:17; 15:5; सभोपदेशक 8:11; इब्रानियों 12:10-11।
खोजें और चर्चा करें। अनुशासन के अभ्यास करने का महान मूल्य क्या है?

(1) अनुशासन पाप को फैलाने से बचाता है।

सभोपदेशक 8:11 चेतावनी देता है "बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है।" और नीतिवचन 10:17 चेतावनी देता है कि "परन्तु जो डांट से मुंह मोड़ता वह भटकता है।" इसलिए, परिवार में अनुशासन की आवश्यकता है, मण्डलियों में, समुदाय में ताकि पाप के फैलने से बचा जा सके और अपराध का मुकाबला किया जा सके।

(2) अनुशासन आत्मिक विकास को बढ़ावा देता है।

नीतिवचन 15:5 के अनुसार अनुशासन *बुद्धि* को बढ़ता है। "परन्तु जो डांट को मानता वह चतुर हो जाता है"। और इब्रानियों 12:10-11 के अनुसार में *पवित्रता* एवं *धार्मिकता* को बढ़ावा देता है। "वह तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं पर शोक ही की बात

दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए है, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है" इसलिए अनुशासन आत्मिक उन्नति के लिए अति आवश्यक बन जाता है, जो मसीही अनुशासित है वे अपने व्यवहार में बुद्धिमान बनते जाते है, अपने चरित्र और पवित्र तथा अपने धर्मी क्रियाकलाप में और विश्वासयोग्य बनते जाते है।

(3) अनुशासन जीवन और प्रेम की तरफ अगुवाई करता है।

नीतिवचन 6:23 सिखाता है "सिखानेवाले की डांट *जीवन* का मार्ग है" और नीतिवचन 3:11-12 सिखाता है कि मसीहियों को प्रभु के अनुशासन का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, क्योंकि वो उन्ही की अनुशासित करता है जिन्हें वो *प्रेम* करता है इसलिए अनुशासन एक तरीका है जिससे परमेश्वर अपना प्रेम आपके उपर प्रकट करता है। क्योंकि वो आपके लिए उत्तम चाहते है।

ख. अनुशासन का अभ्यास करने की प्रक्रिया

1. विभिन्न प्रकार के अनुशासन।

परिचय दें। बाइबल में सात विभिन्न प्रकार के अनुशासन है। वे है अलौकिक अनुशासन, सरकारी अनुशासन, माता-पिता का अनुशासन जिसको हम अपने संक्षेप अध्ययन में चर्चा करेगें और कलीसियाई अनुशासन जिसको हम नीचे और अधिक विस्तार से अध्ययन करेगें।

पढ़ें। नीतिवचन 13:24, रोमियों 13:1-5, गलतियों 1:6-9।

खोजें और चर्चा करें। अनुशासन का पालन करने के लिए परमेश्वर और प्राधिकरण के लोगों के विभिन्न कारण क्या है?

(1) परमेश्वर(मसीह) द्वारा अनुशासन।

परमेश्वर ने इस्राएल को अनुशासित किया जब वे उससे दूर हो गये और उसने दूसरे राज्यों को भी उनकी मूर्तिपूजा और अनैतिक यौन सम्बन्धों के लिए अनुशासित किया (रोमियों 1:18)। यीशु मसीह ने सात कलीसियाओं (संस्थाओं) को पहली शताब्दी में अनुशासित किया। उदाहरण के लिए वह कहते हैं, "पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है की तूने अपना पहला-सा प्रेम छोड़ दिया है"(प्रकाशितवाक्य 2:4)। "पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी है क्योंकि तेरे यहाँ कुछ ऐसे हैं जो बिलाम की (झूठी)शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलीयों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएं और व्यभिचार करें वैसे हो तेरे यहाँ कुछ ऐसे हैं, जो निकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं" (प्रकाशितवाक्य 2:14-15) "पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू उस को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखलाकर भरमाती हैं। मैं ने उसको मन फिराने के लिए अवसर दिया पर वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती। देख, मैं उसे रोग शैय्या पर डालता हूँ; यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएँगे तो मैं उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा, तब सब कलीसियाएँ जान लेगी कि हृदय और मन का परखनेवाला मैं ही हूँ और मैं तुम में से हर एक को उसके

कामों के अनुसार बदला दूंगा पर तुम थुआतीरा के बाकी लोगों से, जितने इस शिक्षा को नहीं मानते और उन बातों को जिन्हें शैतान की गहरी बातें कहते हैं नहीं जानते यह कहता हूँ कि मैं तुम पर और बोझ न डालूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:20-24) "मैं तेरे कामों को जानता हूँ, ... कि तू गुनगुना है - और न ठंडा है - और न गर्म मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूँ ... मैं जिन जिन से प्रेम रखता हूँ उन सबको उलाहना और ताड़ना देता हूँ। इसलिये सरगम हो और मन फिरा" (प्रकाशितवाक्य 3:16-19) "इसलिये, स्मरण कर, कि तूने कैसी शिक्षा प्राप्त की और सुनी भी, और उसमें बना रह और मन फिरा। यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं (चोर के समान) आ जाऊंगा, और तू कदापि न जान सकेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा"(प्रकाशितवाक्य 2-3)।

यीशु अक्रस्मात रूप से कलीसियाओं में वर्तमान समय में दण्ड देने के लिए आते है! अनुशासन का उद्देश्य है पश्चताप! जो कुछ यीशु मसीह ने सात ऐतिहासिक कलीसियाओं को कहा वो संसार के इतिहास में सभी कलीसिया से कहते है (प्रकाशितवाक्य 2:7) न मसीही व्यक्ति न कोई मसीही कलीसिया उसके अनुशासन से छूट सकती है!

(2) सरकार द्वारा अनुशासन।

परमेश्वर ने सरकार को संसार में अधिकार दिया है। और जिम्मेदारी है कि गलत काम करने वालों को दण्डित करें। "वे परेमश्वर के दास है। और *गलत काम वालों के अन्दर उनका भय होना चाहिए (उनके लिए नहीं जो सही है)।*

सरकार के पास अधिकार है कि वह "तलवार", धारण करे वह है कि मृत्युदण्ड को अंजाम दे (रोमियों 13:1-5), लेकिन बाइबल में दर्ज किये गए कारण (उत्पत्ति 9:5-6, निर्गमन 21:12-17, मत्ती 26:52)।

हालांकि, सभी सरकारों के पास सीमित अधिकार है। उदाहरणत: वे अपने देश में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के कार्यों को ना रोकें (उदाहरणत: कार्यों और शब्दों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करना)(प्रेरितों के काम 4:19-20, 5:29)।

(3) माता-पिता द्वारा अनुशासन।

परमेश्वर माता-पिता को अधिकार और जिम्मेदारी दी है कि वे बच्चों का पालन-पोषण शिक्षण प्रभु के दिशा निर्देशों के आधार पर करें (इफिसियों 6:4) और यदि जरूरत पड़े तो दण्डित भी करें "जो बेटे पर छड़ी नही चलाता वह उसका बैरी हैं; परन्तु जो उससे प्रेम रखता वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।(नितिवचन 13:24) बाइबल सिखाती है "अपने बेटे की ताड़ना कर तब उससे तुझे चैन मिलेगा और तेरा मन सुखी हो जाएगा"(नीतिवचन 29:17)।

(4) प्रेरित द्वारा अनुशासन।

यीशु मसीह ने अपने बारह प्रेरितों को विशेष जिम्मेदारी और अधिकार दिए कि कलीसिया में *किसे शामिल करना है और किसे नहीं* (मत्ती 16:18-19, 18:18, प्रेरितों के काम 5:1-11, 8:14-17, गलातियों 1:6-9)

यह प्रेरितों का अनुशासन अब अस्तित्व में नहीं है। क्योंकि कलीसिया में प्राचीनों की समिति बना ली गई है और यीशु मसीह के प्रेरितों का कोई उत्तराधिकारी नहीं है। (प्रेरितों के काम 1:21-22)! प्रतिनिधियों और मिशनरियों के रूप में अभी भी कलीसियाओं में प्रेरित है। (प्रेरितों के काम 14:1-4, 26-28, 2 कुरिन्थियों 8:23, फिलिप्पियों 2:25, 1 थिस्सलुनीकियों 2:6-7) परन्तु उसके पास वैसा अधिकार नहीं है जैसा यीशु मसीह के बारह प्रेरितों में था।

2. स्वयं का अनुशासन।

पढ़ें। मत्ती 18:7-9, लूका 6:42-43, रोमियों 16:17-18, 2यूहन्ना 9-10।
खोजें और चर्चा करें। आत्म-अनुशासन को हर मसीही व्यक्ति कैसे अभ्यास करें?
ध्यान दें। हर एक मनुष्य की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि वह आत्म अनुशासन का अभ्यास करें परमेश्वर के अनुग्रह का सदपयोग करके, हर एक मसीही अपने इच्छा का अभ्यास करके स्वयं को बार-बार समर्पित करें। आखरी समय में, आखरी न्याय के समय परमेश्वर हर एक के उसके कार्यों के प्रति उत्तरदायी ठहराएगा (रोमियों 2:6)।

(1) हर एक मनुष्य जिम्मेदार है कि वह अपने व्यक्तिगत पापों एवं गलत आदतों को अपने अन्दर से दूर करें।

लूका 6:42-43 में यीशु सिखाते है, "जब तू अपनी आँख ही का लट्ठा नहीं देखता, तो अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'हे भाई; ठहर जा तेरी आँख से तिनके को निकाल दूँ'? हे कपटी, पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आँख में है, उस भली भाँती देखकर निकाल सकेगा। 'जब अच्छा पेड़ नहीं जो निकम्मा फल लाए, और न तो कोई निकम्मा पेड़ है जो अच्छा फल लाए'।"

जबकि गैर-मसीही पापों की क्षमा प्राप्त नहीं कर सकते (जब तक वे अविश्वासी बनें रहें), मसीही इस योग्य है कि वे अपने पापों का अंगीकार करे और पूर्ण क्षमा प्राप्त करें(1 यूहन्ना 1:9) जबकि गैर मसीही पाप के दासत्व में होते हैं (जब तक वे नये जन्म को प्राप्त न करें)(यूहन्ना 8:34) मसीहियों ले अन्दर मसीही का आत्मा वास करता है जो उन्हें सामर्थ देता है की पाप का विरोध कर सकें(यूहन्ना 8:36)।

(2) हर इन्सान जिम्मेदार है कि वे विभाजनकारी व्यक्तियों और झूठे शिक्षकों से दूर रहें।

रोमियों 16:17-18 और 2 यूहन्ना 9-10, सिखाता है मसीहीयों को उन लोगों से दूर रहना चाहिए जो विभाजन एवं गलत शिक्षाओं को लेकर आते हैं। जबकि गैर-मसीही लोग शैतान के झूठ का विरोध नहीं कर सकते(यूहन्ना 8:44, 1 यूहन्ना 5:19), मसीही शैतान का विरोध कर सकते हैं (इफिसियों 6:16-17, याकूब 4:7, 1पतरस 5:8) और शैतान के द्वारा चोट नहीं पहुँचाई जा सकती(1यूहन्ना 5:18)।

(3) हर एक मनुष्य जिम्मेदार है कि वो किसी को पाप में गिराने का कारण ना बनें।

मत्ती 18:7-9 यीशु ने कहा, "ठोकरों के कारण संसार पर हाय, हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है"(सारे ठोकरों के कारण)(मत्ती 13:41)! ठोकरों का आना अवश्य है परन्तु हाय उस मनुष्य पर

जिसके द्वारा ठोकर लगती है।" उदाहरण के लिए, जो लोग कैसीनो का लुप्त उठाते हैं, जुआ और लॉटरी भाग्य अजमाना, नाईट क्लब और अनैतिक यौन सम्बन्ध, नशीली वस्तुओं का उत्पादन और बिक्री, सिगरेट सहित, आतंकवादी संगठन एवं हत्याएं, गलत प्रचार और झूठ आदि यह वे लोग है जो बुरे काम करते हैं और पाप को फैलाते हैं।

3. आपसी अनुशासन।

पढ़ें। मत्ती 5:23-24; मत्ती 18:15 गलातियों 6:11।
खोजें और चर्चा करें। कैसे मसीही लोगों को आपसी अनुशासन करना चाहिए?

प्रत्येक मसीही की जिम्मेदारी और अधिकार है कि वे आपसी अनुशासन का अभ्यास करें। यह सामने नहीं रखता कि दूसरें मसीही परमेश्वर के विरुद्ध (पाप करता है) किसी और के विरुद्ध या आपके विरुद्ध या आपके विरुद्ध पाप करता है कि नहीं।

(1) हर एक मसीही समस्या का तुरन्त हल करने के लिए जिम्मेदार है,
जब वह सुनता है कि एक मसीही के मन में उसके खिलाफ कुछ है।

मत्ती 5:23-24, में यीशु सिखाते हैं यदि आपको याद आता है कि तुम्हारे भाई के अन्दर आपके विरोध में कुछ है तो आपको पहल करनी है कि आप उनके साथ मेलमिलाप कर लें। आपसी अनुशासन का अभ्यास व्यक्तिगत रूप से होना चाहिए, चार आँखों के नीचे, और यह कोमलता से होना चाहिए।

(2) प्रत्येक मसीही जिम्मेदार है उसे मसीही चिताने के लिए
जिसने उसके विरोध मे पाप किया है।

दो मसीहीयों के मामले में जब उनके बीच में विवाद है या एक महसूस करता है कि दूसरे ने उसके विरुद्ध पाप किया है उन्हें पहले अपने ही बीच मे समस्या का समाधान निकालना चाहिए इससे पहले वो प्राचीनों या पूरे मण्डली को अपने समस्या में शामिल करें। मत्ती 18:15 में, यीशु सिखाते हैं, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।"

(3) प्रत्येक मसीही अन्य मसीहीयों को चिताने के लिए जिम्मेदार है
जो किसी भी प्रकार के पाप में गिर जाते हैं।

गलातियों 6:1 सिखाता है, "हे भाईयों यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो नम्रता के साथ ऐसे को संभालों और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।"

4. अधिक निजी स्वभाव के पाप का कलीसिया में अनुशासन।

पढ़ें। मत्ती 18: 15-17।
खोजें और चर्चा करें। कैसे मण्डली अधिक निजी स्वभाव के प्रति अनुशासन का अभ्यास कर सकती है?

ध्यान दें।

(1) कलीसिया का अनुशासन।

कलीसिया का अनुशासन तब शुरू होता है जब व्यक्तिगत और आपसी अनुशासन असफल हो जाता है। मत्ती 18:15-17 में यीशु सिखाते हैं, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करें तो जा और अकेले में बातचीत करके समझा, यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने तो एक या दो या तीन गवाहों के मुँह से निश्चित की जाए यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे परन्तु वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाती और महसूल लेने वाले जैसा जाना(वह अन्यजाती के समान है)।"

(2) एक अधिकनिजी स्वभाव के कलीसिया अनुशासन का निर्धारित क्रम।

- **पहला कदम** अपराधी को उसकी गलती को(वास्तविक: उसके पाप का खुलासा करना) अकेले में दिखाना(सिर्फ आपके और उसके बीच में)।
- **दूसरा कदम** तब लिया जाए जब वह न सुने अपने साथ एक या दो लोगों को गवाह के रूप में अपने साथ लेकर जाए और पुन: उसका सामना करे।
- **चौथा कदम** तब लिया जाए जब वह प्राचीनों द्वारा दिए गए सुधार को न सुनकर अपने में दृढ बना रहे। तब प्राचीनों उसे मामलें को सारी मण्डली पर प्रकट करें और औपचारिक रूप से उसे मण्डली की सदस्यता से निष्काशित कर दें। इस प्रकार के अनुशासन को अधिकार धर्म से बहिष्कृत करना कहते है। क्योंकि पश्चाताप न करने वाले पापी को प्रभु भोज से शामिल न होने से लेकर और साथ मण्डली में किसी प्रकार की सेवकाई करने से भी निष्काशित कर दिया गया है। दूसरें सदस्य भी इस बात का ख्याल रखें और वे *गैर-मसीही की तरह व्यवहार करें।* इसका अर्थ यह नहीं कि वह उसके साथ दुश्मन या किनारा करें(अनदेखा करें) पर वह उसके साथ करना चाहिए। वह उसके लिए प्रार्थना करें, उसके साथ सम्पर्क करें, प्यार करें, और उसे मसीह के अधिकारी होने के लिए विश्वास में उसे वापस जीते।

5. अधिक सार्वजनिक स्वभाव के पाप का कलीसिया में अनुशासन।

पढ़ें। रोमियों 12:17-21, 1 कुरिन्थियों 5:1-5,9-13, 2 थिस्सलुनिकियों 3:6-15, 2तीमुथियुस 2:25-26, तीतुस 3:9-11, याकूब 2:12-13, 3 यूहन्ना 9-10।

खोजें और चर्चा करें। कैसे कलीसिया अधिक सार्वजनिक स्वभाव के पाप के साथ अनुशासन का अभ्यास कर सकती है?

ध्यान दें।

(1) कलीसिया का अनुशासन।

कुछ ऐसे पाप हो सकते हैं जहाँ सार्वजनिक रूप से अनुशासन का अभ्यास किया जाए। बाइबल के आधार पर निम्नलिखित पापों का न्याय किया जाना चाहिए।

- कौटुम्बिक व्यभिचार, व्यभिचार समलैगिंकता का स्वभाव वहशीपन (लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23, 1कुरिन्थियों 6:9)

- चोरी, झूठ, धोखा, झूठी कसमें खाना, छल करना, डाका डालना, किसी की मजदूरी ना देना, अपशब्द ठोकर खिलाना, न्याय को बिगाड़ना, पक्षपात करना, बदनामी करना, (राजनीतिक अभिमान में) लुप्तप्राय जीवन अपने हृदय में अपने भाई से नफरत करना, दूसरें के अपराधों का साझा करना, बदले की भावना रखना, पड़ौसियों से प्रेम न रखना, व्यवसाय में ईमानदारी न रखना(लैव्यव्यवस्था 19:11-36)
- एक माध्यम बननें की कोशिश या भूतवादी(लैव्यव्यवस्था 20:27, 1 तीमुथियुस 4:1-2)
- मूर्तिपूजा में अपने बच्चों को शामिल करना दैववणी का अभ्यास करना, टोना, जादू-टोना या अन्य भोगवाद झूठी भविष्यद्वाणी करना(व्यवस्थाविवरण 18:9-14,20)
- दुष्टक्रम, बाल शोषण, लडकों के प्रेमी (व्यवस्थाविवरण 22:25)
- वेश्यावृत्ति (व्यवस्थाविवरण 23:17-18)
- अपहरण, गुलामों का व्यापार (व्यवस्थाविवरण 24:7 1 तीमुथियुस 1:8-11)
- अनजानों को वंछित रखना, पिता समान न्याय न करना (व्यवस्थाविवरण 24:17)
- क्रुरता से किसी को पीटना (व्यवस्थाविवरण 25:1-3)
- झूठ परमेश्वर झूठ बोलने वाली जीभ से और झूठी गवाही देनें से घृणा करता है। (नीतिवचन 6:16-19) झूठे भविष्यद्वक्ता, झूठे शिक्षक, झूठे प्रचारक, झूठे गवाह, झूठे स्वप्न बताने वाले, झूठे दर्शन, आदि ऐसे को तुरन्त निकालना चाहिए परमेश्वर स्वयं ऐसो को दण्ड देगा जो यह घोषणा करते हैं कि जो भी वह बोलते हैं वह प्रभु की ओर से आता है।(यिर्मयाह 23:16-40, साथ ही व्यवस्थाविवरण 18:21-22)
- हत्या (मत्ती 15:18)
- परमेश्वर से घृणा करने वाले, ढ़ीठ, अभिमानी, बुरा करने के लिए रास्तों को बनानें वाले, माँ-बाप की आज्ञा न मानने वाले (रोमियों 1:28-32)
- अनैतिक यौनसम्बन्ध, लालच, ठग, मूर्तिपूजक(दूसरे धर्मों और संप्रदाय की पूजा करना) बदनामी, मतवालापन, ठगी करना (1 कुरिन्थियों 5:11)
- आलस्य, काम न करने का आलस्य, व्यस्ता का दिखावा करना। (थिस्सलुनीकियों 3:11)
- विभाजनकारी लोग, अनेकता की बुनाई करने वाला, समूहों में विभाजन करने वाले(तीतुस 3:10)।
- आतंकवाद, जिहाद (याकूब 4:1-2) अहिंसा, हत्या।
- अय्याशी अभिलाषा, पियक्कड़पन, व्यभिचार, हिड़ोला, और घृणित मूर्तिपूजा।(1 पतरस 4:3)
- अविश्वाशी हत्यारे, नीच,अनैतिक यौनसम्बन्ध, वह जो जादू का अभ्यास करते हैं। मूर्तिपूजा और सारे झूठे लोग।(प्रकाशितवाक्य 21:8)
- इत्यादि।

परन्तु यह सारे न्याय हमेशा मसीही प्रेम से करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:1-8) और दया से। याकूब 2:12-13 बताता है "तुम उन लोगों के समान वचन बोलो और काम भी करो, जिनका न्याय स्वतंत्रता की

व्यवस्था के अनुसार होगा। जिसमें दया नहीं उसका न्याय बिना दया के होगा; दया न्याय पर जयवन्त होती है।" उद्धार की योजना में न्याय मांग करता है कि पापी को दोषी ठहराया जाए और दया विनती करती है कि पापी बच जाए। उद्धार की योजना में दया जीत जाती है। उसी प्रकार कलीसियाई अनुशासन के मामले भी न्याय मांग करता है कि पापी को दोषी ठहराया जाए और दया विनती करती है कि पापी को पश्चताप के लिए राजी किया जाए, ऐसा होने पाए की कलीसियाई अनुशासन के न्याय में दया जयवन्त हो।

(2) अधिक सार्वजनिक स्वभाव के कलीसिया अनुशासन का निर्धारित क्रम।

उदाहरण के लिए गलत धर्मविज्ञान का प्रचार करना अनैतिक यौन सम्बन्धों को बनाना, मुसीबत खड़ी करना और विभाजन का कारण बनना, पैसे के सम्बन्ध में बेईमान होना।

- **पहला कदम** है कि एक अगुवा (तीतुस के समान) पापी को कम से कम दो बार *चिताए* (चेतावनी दें)(यूनानी: मी पारागेलो)(तीतुस 3:10-11) पहली बार चार आँखों के नीचें, दूसरी बार उनके सामने जिनके विरुद्ध पाप किया है या प्राचीनों के सामने।
- **दूसरा कदम** तब लिया जाए जब उसमें पश्चाताप न दिखें, पश्चाताप नहीं करता और भाइयों की चेतावनी पर ध्यान नहीं देता। पूरी कलीसिया करें (यूनानी: सीमायो) ताकि वह *शर्मिन्दगी* महसूस करें (2 थिस्सलुनीकियों 3:14-15, 3 यूहन्ना 9-10) सारी कलीसिया इस पाप के खतरें की समझें और सावधान रहें। हालांकि मसीहीयों को पापी के दुश्मन की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए।
- **तीसरा कदम** तीसरा कदम तब लेना चाहिए जब पापी सार्वजनिक रूप से भी शर्मिन्दा नहीं है अपने व्यवहार के बदलने से इन्कार करता है। तब कलीसिया को पापी के साथ अपनी नजदीकी संगति से दूरी बना लेनी चाहिए 2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14) ने उससे दूर रहें और वह है उससे *बचना या अनदेखा करना* ताकि उसे शर्मिन्दगी महसूस हो।

इस प्रकार का अनुशासन शायद कठोर और अन्यायपूर्ण लगें परन्तु बाइबल में इसके लिए एक अच्छी आज्ञा है। इस प्रकार का अनुशासन किसी छोटी गलती के लिए नहीं है और उनके लिए जो भाई-बहन अपने पापों से पश्चाताप कर लेते हैं। यहाँ तक कि चाहे पाप बहुत गम्भीर क्यों न हो। यह अनुशासन उन मसीहियों के लिए जिन्हें बार-बार चेतावनी देने के बाद पश्चाताप नहीं किया इस प्रकार के पापी न सिर्फ अपने पाप की वजह से अपना जीवन बर्बाद करेगें परन्तु दूसरें मसीहियों को भी दूषित करेगें और उनको भी पाप की तरफ खीचेंगे। जिन पापों के लिए इस गम्भीर अनुशासन का अभ्यास किया जाता है वह निम्निलिखित है। अनैतिक यौन सम्बन्ध हर क्षेत्र में, (अश्लील चित्र देखना, व्यभिचार, वेश्यवृत्ति, समलैंगिकता) आत्मिक अनैतिकता (झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठे शिक्षक संप्रदायों 2 यूहन्ना 10) हर प्रकार की मूर्तिपूजा (पैसे का लोभ, अन्य प्रकार की तांत्रिक विद्या का अभ्यास करना) कड़वाहट (झूठ, दूसरे लोगों के विरोध में घृणा को फैलाना इब्रानियों 12:15) परमेश्वर की मसीह की और से निंदा करना (1 तीमुथियुस 1:19-20) नशा एवं शराब का दुरुपयोग करना और अपराध, दूसरें मसीहियों को उसके पाप में खीचें जानें और उसकी कड़वाहट से अपवित्र होने से बचने के लिए मसीहियों को उसे बचना एवं अनदेखा करना चाहिए।

बिना पश्चाताप किया हुआ पापी शायद अपने आपको समझें और परमेश्वर और मसीहियों के बिल्कुल विरोध में जो जाए और पूर्णत: खो जाए परन्तु यदि कलीसिया बिना पश्चातापी पापी को उसके गम्भीर पापों का अपने मध्य में अभ्यास करने देगें तो बहुत से लोग खो जाएंगे! उत्तम उपाय यह होगा कि एक प्राचीन था सुयोग्य मसीही सलाहकार उस बिना पश्चाताप किए हुए पापी से सम्पर्क करने की कोशिश करें और बड़ी कोमलता से उसे पश्चाताप की तरफ तैयार करें (2 तीमुथियुस 2:25-26)। बिना पश्चाताप किये हुए पापी हो सकता है वह ऐसा करने से बचा लेता है आखिर में वह अपने कार्यों के प्रति शर्म महसूस करके पश्चाताप करें। जो मसीही और प्रचिम उस व्यक्ति के साथ सम्पर्क रखता है वह ऐसा करने से उस पापी को मसीही विश्वास से गिरने से बचा लेता है (1 तीमुथियुस 4:16)।

- **चौथा कदम** तब उठाया जाए जब वचना अनदेखा करना भी सहायक साबित नहीं होता और पापी पश्चाताप नहीं करता तब कलीसिया उसे पूर्णत: उस पापी को अपने मध्य से *हठा* दें। कलीसिया उसकी सदस्यता समाप्त कर दें (1 कुरिन्थियों 5:2) उसके साथ किसी प्रकार की सहभागिता नहीं ताकि उसे शर्मिंदगी महसूस हो (2 थिस्सलुनीकियों 8:14) और *भविष्य में उसे गैर मसीही की तरह इज्जत एक व्यवहार करें।* (मत्ती 18:17) कलीसिया के अन्दर बिना आत्मिक संगती के वह शैतान को सौंपा जाए उसके पापमय विनाशक स्वभाव की वजह से इस आशा के साथ की आखरी न्याय के दिन उसकी आत्मा(प्राण) बचाया जाए (1 कुरिन्थियों 5:4-5)

- कलीसियाई सदस्यता से वंचित कर देना गम्भीर मामला है। एक कमजोर मण्डली के बारें में जैसे कुरिन्थ में है। मसीहियों को बिना देना नहीं होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:9,11,तीतुस 3:10)

- हालांकि मसीहियों को बदला लेना मना है (रोमियों 12:17-21) यदि वह पापी फिर से इस कलीसिया की आराधना सभा में फिर से शम्मिल होना चाहता है तो मसीही लोग उसे ऐसा करने की अनुमति दें और उसे पाप से पश्चाताप करने के नये अवसर दें। दया हमेशा ब्याय के ऊपर जयवन्त होनी चाहिए।(याकूब 2:13)

6. कलीसिया का अनुशासन प्राचीन या कलीसिया के किसी अन्य अगुवे के पाप के प्रति।

पढ़ें। तीतुस 1:6, 1 तीमुथियुस 3:2, 5:1-2,17-20, गलातियों 2:11-16।

खोजें और चर्चा करें। कैसे कलीसिया एक प्राचीन या किसी अन्य अगुवे पर कलीसिया अनुशासन का अभ्यास करें?

ध्यान दें।

(1) प्राचीन को सार्वजनिक रूप से डाँटा जाए जब दो व्यक्ति गवाह के रूप में उपस्थित हो।

1 तीमुथियुस 5:19–20 में लिखा है "कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दें ताकि और लोग भी डरें" प्राचीन और अन्य मसीही अगुवे से छूट नहीं सकते! सारे मसीही अपने अगुवे की शिक्षा एवं कार्यों को देखें।(1तीमुथियुस 4:15–16) यदि अगुवे झूठी शिक्षा देता है या मसीही शिक्षाओं के अनुसार नहीं जीता तब उसे बाकी सब प्राचीन मिलकर समझाएं ताकि वह उस पाप के परिणाम का भय रखें!

यदि वह पश्चाताप करने से मना करता है और अपने कार्यों को सही ठहराता है, जबकि वह दोषी ठहर चुका है, तो सबसे पहले उसे उसके कार्य से निलंबित किया जाए *और सारी कलीसिया को उनके आचरण के बारे में बताया जाए।* यदि वह अपने हृदय को निरन्तर कठोर करें रखता है तो पूरी कलीसिया उनसे नजदीकी संगति रखने से स्वयं को दूर रखें यदि वह निरन्तर पश्चाताप करने से मना करता है तो उसकी सदस्यता समाप्त कर दी जाए।

(2) प्राचीन (कलीसिया का अगुवा) बिना उम्र और ओदे की परवाह किए बिना कलीसिया में अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए।

1तीमुथियुस 5:1–2, 19–20 सिखाता है कि अपराधी को बिना उम्र और ओदे की परवाह किये बिना डांटा जाए कलीसिया में एक प्राचीन के रूप में (गलतियों 2:11–16) जैसे पौलुस प्रेरित दूसरें प्रेरित को उसके पाखंड के लिए फटकार लगाने से सही हिचकिचाएं।

जबकि कुछ अगुवे की संस्कृति किसी बुजुर्ग, व्यक्ति या समुदाय के अगुवे को डांटना सुधारने से मना करता है। (चेहरा खोने के डर से), *मसीही संस्कृति या परमेश्वर के राज्य की संस्कृति आज्ञा देती है* कि बुजुर्ग व्यक्ति और अगुवे दोनों को फटकारा एवं सुधार जा सकता है! इस प्रकार के मामलों में राष्ट्रीय संस्कृति ही मार्ग बनायें परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के लिए और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति का परिचय देना है और निरन्तर कलीसिया में इसका अभ्यास किया जाए।

(3) प्राचीन जो अनैतिक यौन सम्बन्धों में है उन्हें तुरन्त निलंबित किया जाए।

प्राचीन या अगुवा जो अनैतिक यौन सम्बन्धों में लिप्त है उसे तुरन्त प्राचीन और अगुवे पद से निलंबित कर अनुशासित किया जाए क्योंकि अगुवा निर्दोष होना चाहिए परमेश्वर द्वारा दी गई योग्यता है कि प्राचीन "एक ही पत्नी का पति हो" इसका अर्थ कि वह अपवित्र छेड़खानी और स्वयं को अश्लीलता, अनैतिक यौन सम्बन्ध व्यभिचार और तलाक के लिए लिप्त नहीं होते परन्तु पवित्र और आदर के साथ प्रेम से अपनी पत्नी को जीतता है। (1 थिस्सलुनीकियों 4:4, इफिसियों 5:25–29)

ग. पश्चातापी पापी को बहाल करने की प्रक्रिया।

1. पापी पश्चाताप करें।

खोजें और चर्चा करें। पश्चाताप शब्द का अर्थ क्या है? कैसे पश्चातापी पापी अपने पश्चाताप को दिखाए जब वह औपचारिक रूप से पश्चाताप नहीं करना चाहता।

ध्यान दें। पश्चाताप (यूनानी: मेटाननोइयो) अर्थ अपने ''आपको सही ठहराना'' चाहता है। वह सोचता है कि वह सही है साथ ही वह दूसरों को समझाना चाहता है कि वह सही है। परन्तु जब वह पश्चाताप करता है तो उसका मन बदल जाता है कि परमेश्वर सही था और वह गलत पश्चाताप का अर्थ है महसूस करना जो कुछ उसने किया है उसके प्रति धन्यवादी होना गलत कार्यों को निरन्तर करते रहने की बजाए उसका समाधान निकालता है। पश्चाताप का अर्थ है अपने बुराईयों से *फिर कर* जो परमेश्वर की दृष्टि में सही है। *उसकी तरफ फिरना* पश्चाताप का अर्थ है अपने सोच स्वभाव और व्यवहार का नये सिरे से बनाना!

पढ़ें। भजन संहिता 32:1-5। जब तक पापी अपने पापों को स्वीकार नहीं करता है परमेश्वर उसे क्षमा नहीं करेगा और वह अपने जीवन में नाना प्रकार के परिणामों का सामना करेगा (रोमियों 1:18-32, 1कुरिन्थियों 11:30 भी देखें) पाप को स्वीकार एवं अंगीकार किया जाना है।

पढ़ें। नीतिवचन 28:13, यशायाह 57:20-21। जब तक एक व्यक्ति पापों को छुपाए रखेगा वह सफल नहीं होगा परमेश्वर कहते हैं कि वह शांति का अनुभव नहीं कर पाएगा परन्तु सिर्फ बेचैनी उलझन दुख और सब प्रकार के बुरें शारीरिक र्दगुण लक्षणों का अनुभव करेगा। (भजन संहिता 32:3-4)।

पढ़ें। यहेजकेल 18:21-32, मत्ती 3:6-10, प्रेरितों के काम 3:19, 26:20। वास्तविक पश्चाताप पाप को स्वीकार करना और अंगीकार करने के जैसा नहीं है। यह वास्तविक रूप से पुराने पाप से फिरने की आवश्यकता होती है। और जो परमेश्वर की दृष्टि में सही है उसकी तरफ फिरना। इसमें आवश्यकता होती है "पश्चाताप के फलों को उत्पादित करते रहना" एक पश्चातापी पापी को अपने परिवर्तित व्यवहार के द्वारा इसे प्रमाणित करना होता है।(लूका 3:8)

पढ़ें। लूका 13:1-5। पश्चाताप में असफल होना विनाश की ओर ले जाता है!

2. पापी आलौकिक दुख: को प्रकट करें।

पढ़ें। 2 कुरिन्थियों 7:8-13।

खोजें और चर्चा करें। संसारिक दु:ख एवं अलौकिक दु:ख में क्या भिन्नता है?

ध्यान दें। कुरिन्थियों के इस पहली पत्री में 1 कुरिन्थियों 5, पौलुस कलीसिया को फटकार लगाता है कि वह उन कुछ भाईयों के विरुद्ध में अनुशासन में लिप्त है। कुरिन्थियों की कलीसिया ने *अपने बीच अस्वीकार्य पाप को सहन किया!* हालांकि कुरिन्थियों के मसीहीयों को पौलुस की पहली पत्री से पीड़ा महसूस हुई, उन्होनें सकारात्मक तरीके प्रतिउत्तर दिया तथा पापियों को बहार निकाल दिया।

अब उनके लिए दूसरी पत्री में पौलुस कहता है कि उसने पहली पत्री उनको दुखी करने के लिए नहीं लिखी थी। लेकिन उन्हें पश्चाताप तक लाने के लिए उसने कहा परमेश्वर के इरादे के रूप में आप दुखी हो गए। और इसलिए हमारे द्वारा किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचाया गया "अलौकिक दु:ख पश्चाताप को लाता है और उस की तरफ बिना दु:ख छोड़ें हमारी अगुवाई करता है। परन्तु संसारिक दु:ख मृत्यु को ले आता है।"

पौलुस खेद मनाता है कि उसकी पहली पत्री ने उन्हें दु:खी किया परन्तु उसके परिणाम स्वरूप अलौकिक दु:ख उत्पन्न हुआ और पश्चाताप कुछ ऐसा था कि उसने दु:ख नहीं मनाया।

(1) संसारिक दु:ख।

यदि कुरिन्थ के मसीहीयों ने वास्तविकता के साथ पश्चाताप न किया होता तो उन्होनें *संसारिक दु:ख* के साथ प्रतिउत्तर दिया होता और वह पाखंड की आत्मिकता में लिप्त हो जाते और यहां की भेदभाव में भी वह पौलुस की फटकार से जरूर दु:खी हुए क्योंकि उनके पाप के दर्दनाक और अवांछित परिणाम को लेकर वह आत्म कायलता के बजाय आत्म दया दिखा सकते थे। वह परमेश्वर की और मुड़ने की बजाय परमेश्वर के विरोध मे उठ खड़ें हो सकते थे।

एसाव संसारिक दु:ख का एक उदाहरण है इब्रानियों में 12:16-17 इसने पहले अपने पहला पहलौठे बन के अधिकार को बेचा और उसके बाद उसका तिरस्कार हुआ वह इसहाक के मन को नहीं बदल पाया, जबकि उसने अपनी आशीषों को आंसूओं के साथ माँगा। एसाव का दु:ख और आँसू उसकी खोई हुई विरासत के लिए थे!

संसार के दु:ख के लिए दूसरा उदाहरण शाऊल है, 1शमूएल 15:17-31 शाऊल का दु:ख और पाप अंगीकार इसलिए नहीं था कि वह अपने पाप के लिए पश्चाताप कर रहा है। परन्तु क्योंकि वह इस्राएल के प्राचीनों के सामने (यह है कि चेहरा खोना और शर्मिंदा होना) खुद शर्मिन्दा नहीं होना चाहता था।

लूका 23:29-31 में, यरूशलेम की महिलाओं का दु:ख व विलाप यरूशलेम, मन्दिर व उनके परिवार के विनाश के लिए होगा। "सांसारिक दु:ख मृत्यु को उत्पन्न करता है।"

आखरी न्याय के समय, अविश्वासी और अनआज्ञाकारी लोग संसारीक दु:ख को प्रकट करेगें, जिसका समापन उनके रोने और नरक में दांतो को पीसने से होता है। (मत्ती 13:42, प्रकाशितवाक्य 6:15-17)

(2) अलौकिक दु:ख।

हालांकि, कुरिन्थियों के मसीहीयों ने वास्तविक पश्चाताप किया और पौलुस की फटकार को प्रतिउत्तर "अलौकिक दु:ख पश्चाताप को लाता है और वह उद्धार की ओर ले जाता है।" यह वाक्यांश समझा कठिन है। कुरिन्थि के मसीही पहले से उद्धार पाए हुए थे। क्या कुरिन्थियों के मसीहीयों ने उनकी कलीसिया के बीच में घोर अनैतिक यौन सम्बन्धों ने उनकी सहिष्णुता के लिए पश्चाताप नहीं किया था? तब उन्हें दु:ख उठाना पड़ा होगा, अन्नतकाल के उद्धार का नुकसान नहीं (धार्मिकता) लेकिन उनके चल रहें उद्धार के कार्य का नुकसान (पवित्रीकरण और प्रतिफल)

इसलिए यहाँ *पश्चाताप* का मतलब *उद्धार* की बुनियाद नहीं हो सकता, और पश्चाताप का लक्ष्य और परिणाम उद्धार के लिए मैदान कभी वह नहीं है जो मनुष्य करता है (पश्चाताप और पछतावा दिखा रहें हैं) परन्तु हमेशा जो परमेश्वर करता है (उसका अनुग्रह क्षमा, और स्वीकार करना) कुरिन्थियों ने अपने कलीसिया में अपने सहिष्णुता के पाप के लिए पश्चाताप किया, ''इस के अनुसार *सबके लिए एक* ही दु:ख उठाकर उद्धार

के बारें में (aorist tense)(पद 11) सोच को बदलाव की उत्पादित (यूनानी: कटिरगाजोमाई) करता है।'' इस तत्य पर कि उन्होनें पश्चाताप किया (उनके सोच को बदल दिया) इस बात को प्रभावित करता है कि वह वास्तविक रूप से उद्धार पा चुके थे (मत्ती 3:8) यह तत्य पौलुस और तीमुथियुस को बहुत उत्साहित करता है।

दाऊद अलौकिक दु:ख का एक और उदाहरण है जिसने पश्चाताप को उत्पन्न किया है परमेश्वर मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।

(3) पश्चाताप के योग्य फल।

2कुरिन्थियों 7:11 में हम अलौकिक दु:ख के फल के बारें में पढ़तें हैं (परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दु:ख उठाना), ''देखें आपके इस अलौकिक दु:ख ने क्या उत्पन्न किया, क्या *ईमानदारी* स्वयं को स्वच्छ करने की *उत्सुकता* क्या है। क्या *आक्रोश* है। क्या *अलार्म* क्या *लालसा* है। क्या *चिंता न्याय को देखनें की तत्परता,* आपने अपने आपके हर बिन्दू पर इस मामले में मासूम प्रमाणित किया है।''

- **खराई (यूनानी: स्पाउड)।** उनकी पूर्व लापरवाही के विपरीत और पाप के प्रति मण्डली में उनकी उदासीनता ने अब खुद को स्पष्ट रखनें के लिए बहुत गम्भीर थे।
- **माफी मांगनें की उत्सुकता (यूनानी: अपोलोगिया)।** उत्सुक है कि मामले को जल्द से सुलझा लें।
- **रोष (यूनानी: अगानाहेसिस)।** वे *आक्रोश* में थे आपत्तिजनक भाई के साथ नहीं लेकिन खुद के साथ क्योंकि उन्होनें इस तरह के कांड को अपनी मण्डली में अनियंत्रित जारी रखने की अनुमती दी थी। उन्होनें परमेश्वर के नाम को अनादर किया है।
- **भय (यूनानी: फोबोस)।** वह परमेश्वर की सजा से और पौलुस के प्रेरिताई के न्याय करने के अधिकार जो उन पर है *भयभीत* थे।(1कुरिन्थियों 4:21, ''क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं?'')।
- **जिज्ञासा (ग्रीक: इपिपोथिस)।** वे परमश्वेर और पौलुस के साथ पहले के जैसा भरोसेमन्द और प्रेमी रिश्ते फिर से बहाल करना चाहते थे।
- **चिंता (यूनानी: जेलोस)।** वह *चिंतित* थे कि परमेश्वर का आदर बहाल हो और पौलुस की प्रेरिताई का अधिकार उनके मध्य हो।
- **प्रतिशोध देखें की न्याय हुआ है। (यूनानी: एकदीकेसिस)।** उन्होनें देखा कि दोषी व्यक्ति को कलीसिया के अनुशासन के अधीनता में न्याय मिला है।(और गलत प्रेरितों का तिरस्कार किया जिन्होनें कलीसिया में घुसपैठ की)।

अपनी कलीसिया को क्रमवत करने के द्वारा उन्होनें प्रमाणित कर दिया। कि वह एक की अनैतिकता एवं प्रेरितों की झूठी शिक्षाओं के बारें में वह मासूम(शुद्ध) है। उन्होनें कार्यवाही की और अलौकिक दु:ख को प्रकट किया। जहाँ तक इस मामले का सम्बन्ध है वह शुद्व थे और उस पिछली परेशानी हठा दिया गया है।

परन्तु यह अच्छा है कि लोगों को प्रेम की बजाय साथ प्रोत्साहित किया जाए दोनों परमेश्वर पुराने नियम में और यीशु नये नियम में अकसर लोगों के भय के साथ आने वाले न्याय बारें में उत्साहित करते थे अगर वह पश्चाताप न करें। यदि आप लोगों को चेतावनी देगें कि अपना घर जलने वाला है, आप उन्हें भय के साथ प्रोत्साहित करते हैं। कई बार एक मार्ग बचता है कि आप उन्हें क्रियाविन्त करें और वह उपस्थित विपत्ति से भाग सकें! परमेश्वर का सिद्ध प्रेम उसकी सिद्ध धार्मिकता को और सिद्ध पवित्रता को शामिल नहीं करता! और सिद्ध प्रेम ''परमेश्वर के प्रति भय'' की स्वस्थ खुराक शामिल नहीं है!

3. पश्चातापी पापी की वापसी और बहाली।

पढ़ें। लूका 15:17-24, 17:3, 2कुरिन्थियों 2:5-11, इब्रानियों 8:12।

खोजें और चर्चा करें। कैसे कलीसिया एक पश्चाताप किए पापी की वापसी करें? कैसे वह उसे बहाल करें।

ध्यान दें।

(1) अनुशासन का अर्थ धिक्कारना और दण्डित करना है पश्चाताप करने वाले पापी की वापसी और बहाली के राय के साथ

अनुशासन एक प्रकार का दण्ड है। हालांकि दण्ड देने का उद्देश्य यह नहीं कि उस पापी के विरोध यह हम अपने गुस्से को ठण्डा करें लेकिन पापी को बहाल करना अनुशासन का उद्देश्य है कि पापी को आपे में लाएं ताकि उसके आचरण में बदलाव आए और इस तरह उसे वापस प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाकारिता में ले आए! जब किसी भी समय कोई पापी अपने पापों से पश्चाताप करता है तब मसीही लोग और कलीसिया को आज्ञा देता है कि कैसे पश्चातापी पापी को बहाल करें हाँ यह सही है कि उस पापी के अपराध की वजह से पूरी कलीसिया दु:ख मनाती है। 2कुरिन्थियों 2:5-11 में, पौलुस प्ररित कलीसिया और अनुशासन का अभ्यास करके मसीही और सम्पूर्ण कलीसिया अपराधी को दण्डित करती है। तौभी जब वह पश्चाताप करे तो मसीही और कलीसिया उसे क्षमा करे दिलासा(उत्साहित) दें और उसके लिए पुन: अपने प्रेम की प्रमाणिकता दें।

(2) पश्चातापी पापी को क्षमा करें।

लूका 17:3 में, यीशु ने आज्ञा दी, "यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर" एक व्यक्ति जब अपने पाप के लिए जो उसने किया स्वयं को दोषी मानता है और बहुत शर्मिंदगी महसूस करता है तो उसे बहुत बड़ी आवश्यकता है कि वह परमेश्वर पूर्ण क्षमा को प्राप्त करें। उस व्यक्ति और कलीसिया से भी जिनसे वह नाराज़ था।

मत्ती 6:14-15 में, यीशु मसीह सिखाते हैं, "इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" इफिसियों 4:32 "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरें के अपराध क्षमा करो।" मसीहीयों को उस

पश्चातापी पापी को वैसे ही क्षमा करना चाहिए जैसे परमेश्वर उसके पापों को क्षमा करता है। जब मसीही क्षमा करें तब वह उस अपराध के बारें में आगे की बातें ना करें(इब्रानियों 8:12)।

(3) पश्चाताप किये हुए पापी को दिलासा और पुनः पुष्टि दें।

मसीही लोग उस पश्चाताप किये हुए पापी के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसे की मसीह ने हमारे साथ किया था जब हमने पश्चाताप किये हुए पापी को दिलासा(उत्साह) दें ताकि वह अत्यधिक दु:ख से व्याकुल न हो। और मसीही लोग कलीसिया में उसकी सदस्यता को पुनः बहाल करके एवं उसके साथ फिर से संगति करके अपने प्रेम में को उसके प्रति साबित करें। देखें कैसे पिता ने अपने खोए हुए पुत्र के साथ व्यवहार किया जब उसने पश्चाताप किया(लूका 15:17-24)।

4. पश्चाताप किये हुए अगुवे को बहाल करना।

(1) एक सेवकाई के लिए पश्चाताप किए हुए अगुवे को बहाल करने का प्रश्न है।

यह खण्ड एक पूर्व अगुवे को कलीसिया में पुनः सेवकाई की बहाली के सम्बन्ध में है। कैसे एक कलीसिया पूर्व प्राचीन या किसी कलीसिया के अगुवे को बहाल करें। जिसको उसके पाप की वजह से उसको उसकी सेवकाई से निलबिंत और सदस्यता से भी बहिष्कृत किया गया था? यदि वह वास्तविकता के साथ पश्चाताप कर अपने जीवन कि वह पुनः सेवकाई आरम्भ करें?

यह मसीहीयों के बीच में नासक मुद्दा है उपरोक्त में जो कलीसिया के अनुशासन के बिन्दुओं के सम्बन्ध में बताया गया है, बाइबल में इस मुद्दा को इससे आगे विस्तृत नहीं किया गया है।

(2) मसीही जो किसी सेवकाई या अगुवाई करने की बहाली की वकालत नहीं करते है।

कई मसीही अगुवे इस बात से सहमति रखते हैं कि जो मसीही अगुवा एक बार अनैतिक यौन सम्बन्ध में शामिल हो चुका है वह कलीसिया की सेवकाई से सदा के लिए निलंबित रहें, वह विश्वास करते हैं कि उसे बस कलीसिया के सदस्य के रूप में ही बहाल करना चाहिए (और फिर से प्रभु भोज की मेज में शामिल हो सकता है) परन्तु कभी भी कलीसिया में फिर से प्राचीन (याजक) या कोई और अगुवा नहीं बन सकता।

(3) मसीही लोग जो एक परख की अवधि के बाद सेवकाई या अगुवेपन की बहाली की वकालत करते हैं।

अन्य मसीही अगुवे पश्चाताप और पवित्रता से टूटे हुए जीवन को क्षमा करने और मौलिक रूप से बदलने के लिए परमेश्वर की दया और अनुग्रह की सामर्थ को पहचानते हैं। वह इस पर विश्वास करते हैं कि ऐसे व्यक्तियों को सेवकाई या कलीसिया में वापस न लेने के सामान्य नियम की आपत्तियां हो सकती है। यदि इस बात के पुख्ता सबूत है कि मसीही चरित्र के नया स्वरूप काफी समय से मजबूती के साथ स्थापित किये है। (कह लीजिए उदाहरण के लिए पाँच वर्ष) तब उसे फिर से किसी मण्डली की सेवकाई या किसी अन्य सेवकाई में अगुवा माना जा सकता है।

परमेश्वर मूसा को अगुवे के रूप में बहाल किया जबकि उसने हत्या की थी।(निर्गमन 2:11-12, 3:10) परमेश्वर ने सैमसन को पुन: सामर्थ में बहाल किया जबकि उसने अपने नाजीपन के अलगाव की प्रतीज्ञा को तोड़ दिया था।(न्यायियों 16:17-30) परमेश्वर ने राजा दाऊद को बहाल किया जबकि उसने व्यभिचार और हत्या की थी(2शमूएल 11:1, 12:14) परमेश्वर ने मन्नश्शे राजा को बहाल किया जबकि उसने सारे इस्राएल को मूर्तिपूजा, जादू टोना बुरे आत्मावाद में ले गया (एक ऐसा विश्वास कि जो लोग मर चुके है उनकी आत्माओं से किसी माध्यम के द्वारा बातचीत करना और आत्मा को खटखटाना आत्मा की लिखावट को किसी सभा या बैठक में इन कार्यों को करना)(2 इतिहास 33:1-16, लैव्यव्यवस्था 19:31)।

1तीमुथियुस 5:19-20 कहता है जो प्राचीन पाप करे उसे सार्वजनिक रूप से फटकार लगा परन्तु ऐसा नहीं कहता कि उसे उसकी सेवकाई से सदा के लिए निलंबित कर दे।

(4) आखरी निर्णय।

कलीसिया के प्राचीन शायद इस बात की समीक्षा करना चाहते हो कि उनका फैसला बाइबल से है कि नहीं लेकिन इस मामले में अन्तिम निर्णय उनका ही होना चाहिए और कलीसिया के सदस्यों को उनके निर्णय का आदर करना चाहिए।(इब्रानियों 13:17)

घ. अनुशासन का अभ्यास करने के लिए दिशा निर्देश।

1. समस्या की परख।

परिचय। पापों को फटकारने या सुधारने के लिए आप जरूरी जानकारियों को अवश्य इक्कठा कर लें और वास्तविक समस्या को समझने की कोशिश करें आपको विशेष रूप से सतह की समस्या और *मूल समस्या को समझकर बीच के अन्तर को पहचानना चाहिए।*

(1) सतह की समस्या।

सतह की समस्या बोले गए शब्दों के साथ दिखाई देने वाली क्रिया या प्रतिक्रिया है। पापी के व्यवहार और इच्छाए है। उदाहरण के लिए वह भाई के बारें में चुगली करेगा क्योंकि उस भाई ने उसके साथ बुरा किया था।

(2) मूल समस्या।

मूलसमस्या पापी के विचारों स्वभाव और ईच्छाओं की समस्या की जड़ में छुपी होती है। उदाहरण के लिए वह उस भाई के विरुद्ध(क्षमा न करना) कड़वाहट रखता है।

(3) परेशानी की परख करने का अभ्यास।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित बाइबल के हर खण्ड में *सतही समस्या* और *मूल समस्या* क्या है।

पढ़ें 2इतिहास 33:1-6, 21-22। आमोन राजा की सतही परेशानी यह थी कि वह गलत प्रकार के लोगों के साथ शामिल हो गया मुख्यत: मूर्तिपूजक के साथ उसकी मूल समस्या यह थी कि वह एक टूटे घर से निकलकर आया जहाँ उसका पिता भी मूर्तिपूजक था।

पढ़ें भजन संहिता 32:1-4। भजनकार को सतही समस्या यह है कि वह सो नहीं पाया ताकत नहीं है। चिन्ता की वजह से बीमार हो गया मूल समस्या यह है कि वह पाप उसने किया है उसके प्रति वह स्वयं को दोषी महसूस करता है।

पढ़ें मत्ती 22:23,29। सदूकी और कुछ धार्मिक झुण्ड की सतही समस्या यह कि वह झूठी और मूल समस्या है कि उन्हें नहीं पता की वास्तव में बाइबल क्या सिखाती है।

पढ़ें मरकुस 7:1-9। फरीसी और कुछ कलीसिया के सतही समस्या यह है कि वह मनुष्य के बनाए गये धार्मिक नियमों को सिखातें है निरन्तर उन मसीहीयों की आलोचना करते है जो इन नियमों को नहीं मानते उनकी मूल समस्या यह है कि उन्होनें बाइबल को जाने दिया। वास्तव में बाइबल क्या सिखाती है वह नहीं परन्तु मनुष्य के बनाए नियमों और सम्प्रदायों (नियमों, रीतिरिवाजों) की ओर पिछले वर्षों में खिचें चले गए हैं।

पढ़ें लूका 8:11,14। यहाँ सतह पर समस्या यह है कि लोग परमेश्वर के वचन को विभाजित मन से स्वीकारते हैं इसलिए वह अपरिपक्व और फल रहित बने रहते हैं। मूल समस्या यह है कि जीवन की चिंताए, धन और सुखविलास ने परमेश्वर के वचन को उसके जीवन में आने से घोट दिया है।

पढ़ें लूका 18:18,22। सतह पर समस्या है कि यह धनी न्यायी नहीं जानता कि वह अन्नत जीवन पाने के लिए क्या करे। इसकी मूल समस्या यह थी कि वह अपने धन के साथ नाता नहीं तोड़ सकता था।

पढ़ें रोमियों 1:18-32। गैर-मसीही लोगों की सतही समस्या यह भी है कि वह नैतिक रूप से भ्रष्ट थे। वह परमेश्वर के सत्य को दबा रहे हैं और उसे जो सत्य बाइबल में मिलता है उसे झूठ के साथ बदल रहे हैं, अनैतिक सम्बन्ध रखने वाले मसीही हमेशा अपने धर्मविज्ञान को बदलता है(अपने विश्वास को बाइबल के सम्बन्ध में), तो वहां आमतौर पर अनैतिकता मूल समस्या बन जाती है।

पढ़ें 1कुरिन्थियों 3:1-4। इस कलीसिया की सतही समस्या संसारिकता, जलन, और संसार में अन्यजाजी समान कार्य करते थे (उनमें और गैर मसीही में कोई अन्तर महसूस नहीं कर सकता था) वह झगड़ते थे, कलीसिया को सांप्रदायिक झुण्डों में बांट दिया। उनकी मूल समस्या यह थी कि(परिपक्व और कामकाजी) उन्हें यीशु मसीह का चेला बनाया ही नहीं गया था।

पढ़ें 2कुरिन्थियों 4:2; इफिसियों 5:8-12। कुछ लोगों की सतही समस्या होती है कि वह आजाद सोच के होते हैं और वह समाज में बुरें कार्यो, अभ्यासों कि मंजूरी दे देते हैं। उनकी मूल समस्या यह होती है कि उनके अपने जीवन में कुछ गुप्त पाप होते हैं जिनके द्वारा वह उन्हें ढांपना चाहते हैं।

पढ़ें इफिसियों 4:13-15। इन लोगों की सतह पर समस्या यह है कि वह एक परिपक्व मसीही कि तरह नहीं बढ़ते और वह बाइबल आधारित स्वयं की धारणा नहीं बनाते।

पढ़ें 1तीमुथियुस 1:19। सतह पर इन दो लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर से विश्वास को खो दिया।

पढ़ें याकूब 4:2-3। सतह पर समस्या यह है कि वह अपने प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त नहीं करता इसकी मूल समस्या यह है कि(कभी-कभी) वह कभी प्रार्थना नहीं करता, दूसरा कारण यह हो सकता है कि वह एक विशेष पाप को अपने ह्रदय में सजाते रहते हैं।(भजन संहिता 66:18, यशायाह 59:1-2, 1 पतरस 3:12)

पढ़ें 3यूहन्ना 9-10। इस कलीसिया के अगुवे की सतह की समस्या यह थी कि वह दूसरे मसीहीयों (कलीसियों और अगुवो) के बारें में गलत बातें बोलता है। और दूसरे अच्छे मसीही कर्मियों को कलीसिया से दूर रखता है। इसकी मूल समस्या यह है कि वह स्वयं के पास रखना चाहता है और कलीसिया के सारे सदस्यों के ऊपर नियन्त्रण रखना चाहता है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:4-5। इस कलीसिया की सतही समस्या है कि जो कार्यो यह अपने शुरुआती और जीवत कलीसियाई समय में किया करती थी अब नहीं वैसे अब नहीं करती इसका मूल समस्या यह है कि इसने मसीह के प्रति अपना पहला प्रेम खो दिया है।

2. अनुशासन का अभ्यास करने के लिए दिशा निर्देश।

सिखाएं। अनुशासन का अभ्यास करने के लिए बाइबल निम्नलिखित दिशा निर्देश देती है।

(1) सत्य के साथ पापों को अनुशासित करें।

मत्ती 7:1-2 सिखाता है कि मसीही लोग दूसरे लोगो के बारें में कल्पना और निराधार निर्णय लेने में योग्य है। 1 कुरिन्थियों 5:12-13 सिखाता है कि मसीही लोगों को गैर मसीहीयों के बारें में बिल्कुल भी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। वे केवल अपनी कलीसिया में दूसरे मसीहीयों पर टिप्पणी कर सकते हैं। यूहन्ना 7:24 सिखाता है कि मसीही लोग दूसरे के बाहरी आवरण और किसी के गपशप के आधार पर न्याय न करें। यूहन्ना 18:23 सिखाता है कि मसीहीयों को मामले को दोनों तरफ से सुनना चाहिए। 2तीमुथियुस 3:16 सिखाता है कि सत्य की पहचान का स्तर एकमात्र बाइबल है।

(2) पापी को निष्पक्ष रूप से अनुशासित करें।

लैव्यव्यवस्था 19:15 और व्यवस्थाविवरण सिखाती है कि मसीही लोग पापीयों का न्याय निष्पक्ष और धार्मिकता के साथ करें। हमें कभी भी लोगों के बीच में पक्षपात नहीं करना चाहिए, बाइबल पक्षपात के लिए मना करती है। नीतिवचन 17:8,23 सिखाता है कि एक मसीही के लिए रिश्वत देना, और न्याय बिगाड़ने के लिए रिश्वत देना, या किसी और से रिश्वत को रिश्वत देना पूर्णत: मना है!

1कुरिन्थियों 6:11 सिखाता है कि मसीहीयों को चाहिए कि वह अपने मुकदमे को कलीसिया में मसीही भाईयों के पास न्याय के लिए लेकर जाएं। तब संसारिक न्यायलय और न्यायधीश के पास जिसके मन में

बाइबल के सिद्धान्तों के लिए कोई आदर नहीं है। संसारिक की अलग मूल्य प्रणाली है और अन्य रूचियां है और निष्पक्ष्क्षता के साथ न्याय नहीं कर पाता।

(3) पापी को दृढ़ता से अनुशासित करें।

नीतिवचन 27:5 कहता है, "खुली हुई डाँट, गुप्त प्रेम से उत्तम है"। "डाँट" के लिए यूनानी शब्द है (इलेनको) जिसका अर्थ है कि सुधारने के कई संभावित पहलुओं का खुलासा करता है।

- **खुलासा करना।** इफिसियों 5:11-13 के अनुसार हमें पापी के विशिष्ट पाप के साथ *स्पष्टता* से पता होना चाहिए कि इसका अपराध क्या है। पापी इस चीज़ को महसूस कर सकें कि उसका कार्य परमेश्वर की दृष्टि में गलत क्यों था।
- **फटकार।** नीतिवचन 28:23 के अनुसार, हमें पापी को *फटकारना* है डाँटने और उसके आचरणों का खण्डन या अस्वीकृति के द्वारा किया जाना चाहिए।
- **फटकारना या खण्डन करना।** तीतुस 1:9 के अनुसार यदि हो तो हमें जब पापी अपने आप को सही साबित करने की कोशिश करें तो उसका *खण्डन* करना चाहिए, तौभी हमें चाहिए की हम पापी को अपना पक्ष रखनें का अवसर दें, हो सकता है कि पापी के पास कोई सही कारण हो, जिसे हमनें अनदेखा किया हो, हो सकता है कि हमने गलत धारणा या अवांछित आरोप लगाये हो, उसके लिए हमें क्षमा माँगनी चाहिए।
- **सुधारना।** 2 तीमुथियुस 3:16 के अनुसार आखिरकार हमें पापी को *सुधारकर* उसे मार्ग में ले जाना है जिसमें उसे जाना चाहिए।
- **दण्ड।** यदि पापी अनाज्ञाकारिता में बना मूर्ख, अभिमानी और विद्रोह, अपने भाई-बहनों के विराध मे अपने ह्रदय को करता है और प्राचीनों के अधिकार को चुनौती देता है तब हमें उसे उपयुक्त तरीके से *दण्ड* देना चाहिए(नीतिवचन 22:15; इब्रानियों 12:6; प्रकाशितवाक्य 3:19)

  जब यह मुद्दा आपके देश के अपाराधिक न्याय के लिए भी एक मामला हो तो (उदाहरण के लिए बलात्कार, बाल यौन शोषण, अपहरण किसी को वेश्यावृत्ति में धकेलना, चोरी आदि) स्थानिय पुलिस को जरूर सूचित करें। हो सकता है कि कलीसिया का नेतृत्व इस मुद्दे को हल करें।

(4) प्रेम से पापी को अनुशासित करें।

पापी को अनुशासित करने का पूर्ण उद्देश्य हैं कि उसे बहाल करें। मसीहीयों को पापी को बाइबल के अनुसार अनुशासित करके उस पापी से प्रेम करें शान्त-बैठने और पाप के बारें में कुछ ना करने से (कलीसियाई अनुशासन का अभ्यास न करना) पापी फिर भी नाश हो जाएगा। और कलीसिया अपनी विश्वसनीयता संसार की दृष्टि में खो देगी और परमेश्वर का अनादर होगा। परन्तु जब पापी पश्चाताप करता है। तो मसीहीयों को उसके पाप क्षमा करके उससे प्रेम करना चाहिए और उसे संगति में बहाल करना चाहिए।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **परमेश्वर के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 14 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। 2पतरस 1-3** और **यहूदा** के आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(4) प्रभु के पास लेकर आना, इफिसियों 6:4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 18** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है।(भजन संहिता 5:3)
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।